BA Part II (Sub/GEN)

Dr Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GF)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

Lecture I

सामाजिक समस्याएं (Social problems) :- भारतीय समाज सामाजिक नियमों एवं मूल्यों की एक आदर्श व्यवस्था है। समाज के संरचनात्मक एवं संस्थात्मक पक्षों के साथ ही उसके व्याधिकीय पक्ष भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसी व्याधिकीय से सम्बन्धित लोगों का व्यवहार सा० समस्या की श्रेणी में आता है। सामाजिक समस्या का संबंध गतिशीलता एवं परिवर्तन से है। अतः जो समाज जितना अधिक गतिशील और परिवर्तनशील होगा उसकी सामाजिक समस्याएं भी उतनी ही अधिक तीव्र होगी।

सामाजिक समस्या से तात्पर्य उन सामाजिक दशाओं से है जो सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों की उपेक्षा करने के कारण उत्पन्न होती है। ऐसी दशाओं को सामाजिक समस्या तभी माना जा सकता है जबकि सम्पूर्ण समाज उन दशाओं का विरोध करे या अधिकांश सदस्य उन्हें दूर करने का

2020-8-5 16:46

प्रदान करें। ग्रीन व वीलरमिक ने इसी समस्याओं को सामाजिक समस्या माना है जो मानवीय संबंधों के क्षेत्र में पायी जाती है। इसके अनुसार समुदाय की सभी समस्यायें सामाजिक नहीं होती है। सामाजिक समस्यायें वही हैं, जो सामाजिक जीवन के क्षेत्र में उत्पन्न होती हैं और जिनसे समूह, समुदाय अथवा समाज के लोगों के आपसी सम्बन्ध बिगड़ते हैं और संगठित समाज की व्यवस्था टूटती है।

सामाजिक समस्या के लिए यह आवश्यक है कि उसे समाज के अधिकांश सदस्य आपत्तिजनक, निंदनीय अथवा अवांछनीय स्वीकार करें अर्थात समाज ऐसे कार्य को बहिष्कृत कर दे। उदाहरण के लिए किसी समाज में जुआ खेलना या शराब पीना बुरा न माना जाए तो यह सामाजिक समस्या के रूप में विवेचित नहीं किया जा सकता।